[This question paper contains 2 printed pages.]
यह प्रश्न 2 मुद्रित पृष्ठों का है।

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 15177

L

Name of the Course	:	ITEP
Unique Paper Code	:	2052101203
Name of the Paper	:	हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं
Semester	:	II, 2025-2026

समयावधि: 3 घंटे पूर्णांक: 90

महत्वपूर्ण निर्देश:

- इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्ही दो गद्यांशों की व्याख्या कीजिए। (10 +10)

(क) आचरण की सभ्यता का देश ही निराला है। उसमें न शारीरिक झगड़े हैं, न मानसिक, न आध्यात्मिक । न उसमें विद्रोह है, न जंग ही का नामोनिशान है, और वहाँ न कोई ऊँचा है, न नीचा। न कोई वहाँ धनवान है और न कोई निर्धन। वहाँ प्रकृति का नाम नहीं, वहाँ तो प्रेम और एकता का अखंड राज्य रहता है।... जिस समय आचरण की सभ्यता संसार में आती है उस समय आकाश से मनुष्य को वेद- ध्वनि सुनाई देती है; नर-नारी पुष्पवत खिल जाते हैं, प्रभात होता जाता है, प्रभात का गजर बज जाता है, नारद की वीणा अलापने लगती है, ध्रुव का शंख गूँज उठता है। प्रहलाद का नृत्य होता है, शिव का डमरू बजता है , कृष्ण की बाँसुरी की धुन प्रारंभ हो जाती है। जहाँ ऐसे शब्द होते है,जहाँ ऐसे पुरुष रहते हैं,जहाँ ऐसे ज्योति होती है, वहीं आचरण की सभ्यता का सुनहरा देश है।

अथवा

दुख की श्रेणी में प्रवृत्ति के विचार सी करुणा का उल्टा क्रोध है । क्रोध जिसके प्रति उत्पन्न होता है, उसकी हानि की चेष्टा की जाती है। करुणा जिसके प्रति उत्पन्न होती है, उसके भलाई का उद्योग किया जाता है। किसी पर प्रसन्न होकर भी लोग उसकी भलाई करते हैं। ।। मनुष्य ज्यों ही समाज में प्रवेश करता है, उसके सुख और दुख का बहुत सा अंश दूसरे की क्रिया या अवस्था पर अवलंबित हो जाता है और उसके मनोविकारों के प्रवाह तथा जीवन के विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है। वह दूसरों के दुख से दुखी और दूसरों के सुख से सुखी होने लगता है।

(ख) राजा ने पूछा – "विशेषज्ञों, तुम्हारी जाँच पूरी हो गई"। "जी, सरकार"। "क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला"। "जी, बहुत सा मिला"। राजा ने हाथ बढ़ाया – "लाओ मुझे बताओ । देखूँ , कैसे होता है"। विशेषज्ञों ने कहा – "हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है । पर वह सर्वत्र व्याप्त है । उसे देखा नहीं जा सकता , अनुभव किया जा सकता है ।.. विशेषज्ञों ने कहा – "हाँ, सरकार सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के लिए जिस बिल का भुगतान किया गया है , वह बिल झूठा है। वह वास्तव में दुगुने दाम का है। आधा पैसा बीच वाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है, और वह मुख्यत: घूस के रूप में है।

अथवा

मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी । घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता । कहा जाता है , ब्रह्मा को सृष्टि करने के लिए न प्रत्यक्ष प्रमाण सहायक हो सकता है, न अनुमान ही. .. प्राकृतिक आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था। खेती,बागवानी ,तथा घर द्वार से मुक्त वह आकाश के पक्षियों की भांति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था, जाड़ें में यदि इस जगह था तो गर्मियों में वहाँ से दो सौं कोस दूर ।

2. "जातियों का अनूठापन" निबंध में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है" के माध्यम से आचरण के महत्व को लिखिए।

3. 'करुणा', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाव – मनोविकार संबंधी निबंध है ? विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध की मूल संवेदना लिखें।

4. 'नए साहित्य : साहित्य की साधना' जीवनी पाठ का मुख्य प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'सदाचार का ताबीज' व्यंग्य में वर्णित प्रशासनिक (दरबारी संस्कृति) भ्रष्टाचार के स्वरूप पर प्रकाश डालियें।

5. 'अज्ञेय के साथ; संस्मरण का साहित्यिक प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अथातों घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृतांत के माध्यम से यात्रा वृतांत के महत्व को लिखिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए: (10)

(क) हिंदी निबंध का उद्भव और विकास परंपरा ।

(ख) जातियों का अनूठापन इस देश के इतिहास का फल है ।

(ग) रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक योगदान ।